राज्य स्तरीय वरिष्ठ नागरिक सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया जी का अभिभाषण

दिनांक : 22 फरवरी 2024, गुरुवार	समय : 11.00 AM	स्थान : पंजाबाड़ी, गुवाहाटी

- असम के पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के माननीय मंत्री श्री रंजीत कुमार दास जी,
- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के आयुक्त एवं सचिव श्री वीरेंद्र मित्तल जी,
- विभाग के निदेशक श्री भाष्कर दास जी,
- वरिष्ठ नागरिक कल्याण परिषद, असम के अध्यक्ष श्री अशोक बरठाकुर जी,
- माननीय मुख्यमंत्री, असम के शिक्षा सलाहकार डॉ. ननी गोपाल महंत जी,
- नगालैंड विश्वविद्यालय के चांसलर डॉ. समुद्र गुप्ता कश्यप जी,
- असम वरिष्ठ नागरिक संघ के अध्यक्ष श्री सुरेश सैकिया जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- देवियों और सज्जनों,

नमस्कार !

सबसे पहले मैं आपको बता दूं कि मैं कुछ ही महीनों में पचहत्तर साल का हो जाऊंगा। मेरी तरह, कई अन्य लोग भी हैं, जो अपनी बढ़ती उम्र के बावजूद विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावशाली ढंग से काम कर रहे हैं और अपनी सफलता की कहानियां लिख रहे हैं।

आज इस सभागार में बड़ी संख्या में मेरे वरिष्ठ नागरिक मित्र गण उपस्थित हैं, जिनका राज्य के विकास में बहुत बड़ा योगदान है। वे बहुत ही उपयोगी जीवन जी रहे हैं और मुझे विश्वास है कि वरिष्ठ नागरिकों के पास करने के लिए अभी भी बहुत कुछ है। इस मौके पर, मैं आप सभी को प्रणाम करता हूँ और आपकी कुशलता और खुशहाली के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

मैं समझता हूँ कि इस प्रकार का "राज्य स्तरीय वरिष्ठ नागरिक सम्मेलन" का आयोजन किया जाना, वास्तव में एक स्वागत योग्य पहल है। मैं इस पहल के लिए असम सरकार के असम सरकार की **वरिष्ठ नागरिक परिषद, सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग** और **असम वरिष्ठ नागरिक संघ** को बधाई देता हूं।

देवियों और सज्जनों,

भारत एक ऐसा देश है, जिसकी सभ्यता प्राचीन है और आदिकाल से ही हमारे पूर्वजों ने हमें सिखाया है कि माता-पिता का आदर करना चाहिए। ये सामाजिक मूल्य हमारी सभ्यता में निहित हैं। यदि इस संबंध में कोई भटकाव होता है, तो हमें इसे ठीक करना होगा। वरिष्ठ नागरिकों सहित हमारे समाज के सभी कमजोर वर्गों के लिए सुरक्षा का माहौल बनाना और उसे कायम रखना हम भारतीयों का सामूहिक दायित्व है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 41 में अन्य बातों के साथ-साथ यह प्रावधान है कि राज्य अपनी आर्थिक क्षमता और विकास के अधीन वृद्धजनों के सहयोग की विशेष व्यवस्था करेगा। बहुत से उपाय किए जा रहे हैं और आने वाले समय के साथ बहुत से और उपाय किए जाने की संभावना है।

मित्रों,

चिकित्सा देखभाल और स्वास्थ्य सेवाओं की उन्नति से जीवन प्रत्याशा में वृद्धि एक वैश्विक परिघटना बन गई है, जिससे विश्वभर के सभी समाज में वरिष्ठ नागरिकों की संख्या अभूतपूर्व रूप से बढ़ गई है। हमारा देश भी अपवाद नहीं है। वर्ष 2011 में, हमारे बुजुर्गों की आबादी 10.3 करोड़ थी, जो 2021 में बढक़र 13.8 हुई और यह आकड़ा लगातार बढ़ता जा रहा है।

तथापि यह विडंबना है कि आर्थिक विकास, आधुनिकीकरण और हमारे युवाओं के रोजगार के लिए शहरी इलाकों में प्रवास से ऐसे हालत पैदा हो गए हैं कि जहां बुजुर्ग अपेक्षित सम्मान, प्रेम और देखभाल से वंचित हो रहे हैं। हमारे बुजुर्ग लोगों को अत्यधिक भावनात्मक और शारीरिक राहत तथा सहयोग प्रदान करने वाली हमारी पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली का स्थान एकल परिवार ढांचा लेता जा रहा है।

इस प्रकार, हमारे देश के वृद्धजन निरंतर आधुनिकता और प्रगति तथा सामाजिक मूल्यों में रवैये के बदलने से जुड़ी अनेक समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

मैं जानता हूं कि केंद्र और राज्य सरकार उनकी वित्तीय और खाद्य सुरक्षा, उनकी स्वास्थ्य देखभाल और उनके जीवन की गुणवत्ता सुधारने के लिए अन्य प्रमुख जरूरतों के लिए ठोस नीतियां तैयार करके कार्यान्वित करना चाहती है। केन्द्रीय मंत्रालय और विभाग विशेष योजनाएं अमल में लाने तथा आयकर छूट, रेल और हवाई रियायत तथा बैंक जमा पर अधिक ब्याज दर आदि के रूप में छूट तथा सुविधा प्रदान करने के लिए समन्वय कर रहे हैं।

मित्रों,

आज चिकित्सा विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ, उम्र सिर्फ एक संख्या है। यदि आप स्वस्थ हैं तो उम्र आपको अनुभव और गौरव देगी। मन और आत्मा से युवा बने रहना भी संभव है, भले ही आपने कितनी भी पीढ़ियां देखी हों। जैसा कि प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक डब्ल्यू समरसेट मौघम ने कहा है, **"बुढ़ापे के अपने सुख हैं, जो अलग होते हुए भी युवावस्था के सुखों से कम नहीं हैं।"**

कहा जाता है कि दुनिया में हर महीने दस लाख से ज्यादा लोग 60 साल की दहलीज पार कर रहे हैं। इसलिए, बुजुर्गों की समस्याओं पर पर्याप्त ध्यान देने के इरादे से, संयुक्त राष्ट्र ने 1 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के रूप में घोषित किया।

दुनिया भर में जहां इस बात पर खुशी मनाई जा रही है कि चिकित्सा विज्ञान और आर्थिक विकास ने इंसानों की जीवन-अवधि को बढ़ा दिया है, वहीं यह भी सच है कि हमारे समाज में "बुढ़ापा" आज भी एक चुनौती से कम नहीं है।

भारत एक युवा राष्ट्र है और हम इस तथ्य का जश्न मनाते हैं कि हमारी 50 प्रतिशत से अधिक आबादी 25 वर्ष से कम उम्र की है। इसलिए देश के विकास में युवा आबादी का योगदान अभूतपूर्व रहने वाला है। हमें पूरा विश्वास है कि युवा आबादी ही देश के आर्थिक भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है।

मेरा मानना है कि वरिष्ठ नागरिकों का आशीर्वाद युवा पीढ़ी को हमेशा लेना चाहिए। साथ ही उनकी जरूरतों और सुरक्षा का भी पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए। यह हमारी संस्कृति है और संस्कार भी।

देवियों और सज्जनों,

हमारी हजारों वर्षों की परम्पराएं रही हैं कि हम स्वयं के साथ-साथ दूसरों की देखभाल करें। इसलिए हमारी भारतीय संस्कृति ने "परोपकार" को परम धर्म माना है। वसुधैव कुटुंबकम् का भाव भी इसी में निहित है।

बुजुर्गों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए हमारी सरकार समय-समय पर अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाती रही है। हमने "शहीद कुशल कोंवर सार्वजनिक वृद्ध पेंशन योजना" और "इंदिरा मिरी सार्वजनिक विधवा पेंशन योजना" भी शुरू की है। इन योजनाओं का लाभ सभी लाभार्थियों को मिल रहा है।

मेरा मानना है कि भारत में वृद्धों और बुढ़ापे से संबंधित मुद्दों को मुख्यधारा में लाने की तत्काल आवश्यकता है। हमारे समाज को बुजुर्गों की आवश्यकताओं को कदापि अनदेखा नहीं करना चाहिए। हमें उम्रवाद (Ageism) से लड़ने की ज़रूरत है, जो सामाजिक मानस में इतनी गहराई तक व्याप्त है। बुज़ुर्गों को ख़त्म हो चुकी ताकत नहीं समझा जाना चाहिए, बल्कि उन्हें समाज के कल्याण में योगदान देने वाले सक्रिय सदस्यों के रूप में देखा जाना चाहिए।

दूसरी ओर वृद्धावस्था की सबसे बड़ी त्रासदी अनावश्यक और उपेक्षित तथा जीवन का कोई मकसद न होने की भावना है। हमारे वरिष्ठ नागरिकों को भी 'सेवानिवृत्ति की मानसिकता' से बाहर निकलने की जरूरत है। आपको अपने अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए साहस दिखाना होगा। आप अपने लम्बे अनुभवों से समाज को नई दिशा देने का काम कर सकते हैं। मैं समझता हूँ कि सामाजिक भागीदारी ही वह मूलमंत्र है, जो स्वतंत्रता, गरिमा और आत्म-संतुष्टि सुनिश्चित कर सकता है।

आज युवाओं के पास ऊर्जा है, तो बुजुर्गों के पास ज्ञान और अनुभव है। किसी भी परिस्थिति में, हमारे समाज में बुजुर्गों को यह आभास नहीं दिया जाना चाहिए कि वे एक बोझ हैं और हम उनकी देखभाल करने में अनिच्छुक हैं। हमें उनकी ख़ुशी सुनिश्चित करने की ज़रूरत है और हमें निश्चित रूप से उनके आशीर्वाद की ज़रूरत है।

मैं समाज के प्रत्येक नागरिक से आह्वान करता हूं कि वे हमारे देश में बुजुर्गों के कल्याण को सुनिश्चित करने और समाज को समृद्ध बनाने और हमारे राष्ट्र की श्रीवृद्धि और प्रगति में योगदान करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें।

मैं अपनी बात को थियोडोर रूजवेल्ट के एक उद्धरण के साथ समाप्त करना चाहूंगा, जिन्होंने कहा था, "बुढ़ापा हर चीज की तरह है। इसे सफल बनाने के लिए, आपको युवा बनना होगा।"

धन्यवाद,

जय हिन्द।

जय भारत।।